Leadership, Education, Personality: An Interdisciplinary Journal ISSN: 2524-6178
www.sibe.rpress.co.in, Vol. 17, Issue 09 September 2022, UGC CARE 1

हिन्दी पत्रकारिता का वैश्विक परिदृश्य

डॉ0 दीपिका आर्या
असिस्टेंट प्रोफेसर–हिन्दी
राजकीय महाविद्यालय, शीतलाखेत(अल्मोड़ा)

आज हम ऐसे युग का अहम हिस्सा बन गए हैं जिसके परिवार का दायरा एकल होते हुए भी किसी न किसी माध्यम से हम स्वयं को विश्व के एक–एक कोने से जुड़ा हुआ पाते हैं। पत्रकारिता ही यह माध्यम है जो हमारे जीवन को एक नया आयाम प्रदान कर रही है। हिंदी का पत्रकारिता शब्द अंग्रेजी के जर्नलिज्म शब्द का परिचायक है। जर्नलिज्म शब्द जर्नल से व्युत्पन्न हुआ है। 'जर्नल' शब्द का अर्थ है– दैनिक विवरण। मूलतः यह शब्द अपनी उत्पत्ति के लिए फ्रेंच के जर्नी शब्द का आभारी है। जर्नी शब्द का अर्थ है – प्रतिदिन के कार्य का विवरण प्रस्तुत करना। अतः जर्नल शब्द के लिए मैगजीन शब्द का प्रयोग होता है। हिंदी में मैगजीन को पत्रिका कहा जाता है। एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका के अनुसार इटालियन जर्नल शब्द की उत्पत्ति लैटिन के 'डियोना' शब्द से है।''[1]

वैश्विक परिदृष्य में पत्रकारिता को यदि आसान भाषा में समझा जाए तो यह अर्थ निकलता है कि एक ऐसी पत्रकारिता जिसमें अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर समाचार व जानकारी हो जो कई राष्ट्रों, क्षेत्रों, वैश्विक परिवारों के बीच के आपसी संबंधों को प्रभावित करती हो। आज विश्व में मीडिया के क्षेत्र में हिंदी भाषा की संभावनाएं बढ़ती ही जा रही है। हिंदी भाषा का बढ़ता वर्चस्व विदेशी मीडिया जगत को भी प्रभावित कर रहा है। जिस कारण रोजगार के नवीन अवसरों का भी सृजन हुआ है। ''इंटरनेट पर 1996 से पहले भारतीय पत्र–पत्रिकाओं की संख्या लगभग नगण्य थी। 1995 में पहले पहल अंग्रेजी के पत्र 'द हिंदू' ने अपनी उपस्थिति दर्ज की और ठीक उसके बाद 1996 में न्यूजीलैंड से प्रकाशित 'भारत दर्शन' ने प्रिंट संस्करण के साथ अपना वेब प्रकाशन www-bharatdarshan-co-nz भी आरंभ कर दिया। भारतीय हिंदी प्रकाशनों में दैनिक जागरण ने सबसे पहले 1997 में इंटरनेट पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराई और उसके बाद अनेक पत्र–पत्रिकाएं वेब पर प्रकाशित होने लगीं.....आज यदि हम ऑनलाइन हिंदी पत्रकारिता की बात करते हैं तो 'भारत– दर्शन' सर्वाधिक पढ़ी जानेवाली ऑनलाइन हिंदी पत्रिकाओं में से है। इसके वेबहिट्स की संख्या 13 से 16 लाख मासिक है। गूगल ने इसे अपने हिंदी मीडिया में विशेष स्थान दिया है। गूगल ने इसे अपनी सूची में दैनिक भास्कर व जागरण जैसे दैनिक पत्रों के समकक्ष स्थान देकर इसकी पत्रकारिता व गुणवत्ता को सम्मानित किया है।''[2]

वैश्विक स्तर पर पत्रकारिता की संभावनाएं एवं चुनौतियां जानने से पहले पत्रकारिता के विविध रूपों को जानना अति आवश्यक है। पत्रकारिता वर्तमान में मात्र समाचार पत्र व पत्रिकाओं तक सीमित नहीं है आधुनिक संचार माध्यमों में वृद्धि होने के कारण इसका फलक अत्यंत विस्तृत हो चुका है। ''जनसंचार माध्यमों

का वर्गीकरण हम इस प्रकार कर सकते हैं–

(1) मुद्रण माध्यम – इसमें समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, जर्नल, पैम्फलेट्स आदि आते हैं।

(2) इलैक्ट्रॉनिक माध्यम–इनको हम पुनः दो भागों में बाँट तो वो जो केवल श्रव्य माध्यम हैं। जैसे– रेडियो, ऑडियो कैसेट आदि वे हैं जो दृश्य और श्रव्य दोनों हैं जैसे–फिल्म, टेलीविजन, वीडि डी. आदि।

(3) अधुनातन इलैक्ट्रॉनिक माध्यम–इसमें कंप्यूटर, इंटरने प्रणाली को रख सकते हैं।''[3]

जनसंचार माध्यमों में इंटरनेट के आने से मानो कोई तहलका ही मच गया हो। आज संपूर्ण संसार में शायद ही ऐसा कोई हो जो मोबाइल या इंटरनेट से परिचित न हो। आज गरीब से गरीब परिवार के सदस्यों में एक न एक मोबाइल फोन होना कोई बहुत बड़ी बात नहीं है। यह एक आम जीवन का हिस्सा बनता चला जा रहा है। मोबाइल की ऐसी उपलब्धता के कारण ही इंटरनेट प्रत्येक आम मनुष्य तक पहुंच चुका है। जिसके माध्यम से प्रत्येक समाचार मिनट में ही प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंच पा रहा है। इसे तकनीकी उपलब्धि माना जाए या जीवन के लिए अभिशाप यह कह पाना अभी कठिन है। किंतु यह कहा जा सकता है कि डिजिटल भारत की विकासयात्रा में हिंदी पत्रकारिता महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

अशोक श्रीवास्तव, समाचार 4 मीडिया के मीडिया संवाद 2023 में वैश्विक स्तर पर भारतीय मीडिया को लेकर इस बात पर चिंतन करते हुए कहते है, ''आज हम अर्थव्यवस्था के मामले में ब्रिटेन से आगे निकल गए हैं। ऐसे में मेरे मन में एक सवाल आता है कि आज भारत का कोई ऐसा मीडिया संस्थान क्यों नहीं है जिसे हम सही मायने में वैश्विक मीडिया का सके जो दुनिया में भारत की बात रख सके और भारत का दृष्टिकोण रख सके।''[4]

आज चौथा स्तंभ कहा जाने वाला मीडिया, पत्र पत्रिकाओं मात्र तक सीमित नहीं रह गया है। मीडिया जनता तक खबर पहुंचाने का कार्य करने का एक माध्यम नहीं रहा है। आज के समय में पत्रकार, समाचार पत्र, न्यूज चैनल, पेज 3, जैसे शब्द एक अलग दुनिया को प्रतिबिंबित करते दिखाई पड़ते हैं। एक ऐसी दुनिया जिसमें सच और झूठ को जान पाना एक आम इंसान के लिए अत्यंत कठिन कार्य हो गया है। धन की लालसा में एक ऐसी होड़ लगी हुई है कि कौन सही बात कर रहा है यह कह पाना दुष्कर है। ''दरअसल, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया एवं इंटरनेट मीडिया के बहुवचनात्मक स्वरूप के बाद उसकी कुछ सीमाएं हैं। पहला तो वह 'प्रेजेंटिस्म' का षिकार होता है, उसे हर चीज फौरी चाहिए। इसलिए उसे सिर्फ सूचनाओं की दरकार होती है। वह घटनाओ के कारणों एवं उपलक्ष्यों की तफ़्सील में नहीं जाता। दूसरी चीज कि उसकी नज़र दर्षकों की रूचि और दिलचस्पी पर केंद्रित होती है कारण कि उसे हर हाल में टी0आर0पी0 चाहिए।''[5]

यह हाल मात्र भारत का ही नहीं है अपितु पूरे विश्व का है । जितने लोग, उतने चैनल, उतने ही पत्रकार, और वैसी ही पत्रकारिता। ऐसी स्थिति में वैश्विक पत्रकारिता एक चुनौती का कार्य बन गई है। आज जो खबर भारत के बाहर जाती है वह खुद में कितनी सच्चाई समेटे हुए हैं इसका आकलन कर पाना कठिन है। और जो खबरें हमें विश्व की प्राप्त हो रही है वह भी कितनी संवेदनशील स्थिति में कितनी परतों में लपेटी हुई हम तक पहुंची है यह भी वास्तव में कोई नहीं जानता। ऐसे में वैश्विक स्तर पर हिंदी पत्रकारिता की

चुनौतियों को समझा जा सकता है। सर्वप्रथम हिंदी के राष्ट्रीय व अंतरर्राष्ट्रीय स्तर पर समस्त कार्य हिंदी भाषा में संपादित होना ही एक चुनौती का कार्य है।

भारत की राजभाषा का दर्जा हिंदी यद्यपि 14 सितंबर ,सन 1949 में ही प्राप्त कर चुकी थी किंतु राष्ट्रभाषा का दर्जा हिंदी को आज भी अप्राप्त है। जिस कारण भारत के ही अधिकांश दक्षिणी राज्यों में हिंदी अपने अस्तित्व को मात्र बचाए हुए ही है। हिंदी को जो मान सम्मान इतने वर्षों में संपूर्ण भारत में मिल जाना चाहिए था वह आज भी लाचार होकर आंखें गड़ाए हुए भारत की ओर देख रहा है। विश्व में प्रत्येक देश अपनी भाषा पर जो गर्व महसूस करता है वही गर्व भारत भी अपनी भाषा हिंदी पर करता है किंतु हिंदी के एकमात्र विकल्प के रूप में उसे अपनाया जाना अभी शेष है। हिंदी को भारत की धरती में सर्वांगीण विकसित होने व फलने फूलने का पूरा अधिकार है। तभी विश्व में उसके पुष्प एवं फल अपनी वास्तविक सुगंध एवं स्वाद के साथ पहुंच पाएंगे।

वैश्विक स्तर पर हिंदी आज अनेक देशों में अपना स्थान बना रही है। जिसका श्रेय हिंदी सिनेमा जगत एवं हिंदी साहित्य को भी जाता है। अंतरर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी को प्रतिष्ठित करने का श्रेय अनुवादित रचनाओं के अनुवादकों को भी जाता है। ''हिन्दी की लोकप्रियता हर साल 94 प्रतिषत की दर से बढ़ रही है क्योंकि यह उन सात भाषाओं में से एक है जिनका उपयोग वेब एड्रेस बनाने के लिए किया जाता है। गूगल पर हिन्दी में 10 करोड़ पेज हैं। वेब,विज्ञापन, सिनेमा और बाजार के क्षेत्र में हिंदी की मांग तेजी से बढ़ी है, वैसी किसी और भाषा में नहीं।''[6] भारत से बाहर हिंदी पत्र पत्रिकाओं हिंदी समाचार पत्रों के पठन–पाठन में अब अहिंदी भाषी लोगों का भी रुझान बढ़ गया है। जिससे हिंदी सीखने और सिखाने वाले लोगों की संख्या में बढ़ोतरी हुई है। जो हमारे लिए एक गर्व की बात है।

वैश्वीकरण से उपभोक्तावाद को बढ़ावा मिला है जिससे विज्ञापन जगत में एक नया उफान आया और नवीन विचार–व्यवहार की तकनीक विज्ञापन की लोकप्रियता भाषिक स्तर पर बढ़ने लगी। हिंदी भाषी भारतवासी देश–विदेश के कोने–कोने में निवास कर रहे हैं। भारत की जनसंख्या सदा से ही बाजार के रूप में एक अहम भूमिका निभा रही है। चीन जापान हो या कोई अन्य देश सभी अपने उत्पादों को बेचने के लिए भारत को निशाना बनाते रहे हैं। टेलीविजन, इंटरनेट पत्रकारिता, बढ़ती ऑनलाईन खरीददारी ने इसे बढ़ावा दिया है। आर्टिफिषियल इंटेलिजेंस से हम सभी आज रूबरू हो चुके होंगे। मोबाइल, लैपटॉप या फिर स्मार्ट टी.वी. ही ले लीजिए, आप मात्र किसी उत्पाद या वस्तु का जिक्र या एक ब्राउसर में लिखकर खोज कर देखेंगे तो पाएंगे कि अब वही उत्पाद या वस्तु का विज्ञापन आपको सभी जगह मिल जाएगा। प्रत्येक खरीददारी की ऐप में अब आप हिन्दी में खोजबीन कर कुछ भी खरीद सकते है। क्या यही हिन्दी की वास्तविक उपलब्धि मान ली जाए?

पत्रकारिता और साहित्य एक दूसरे के पूरक है। जब हम साहित्य के क्षेत्र में आगे बढ़ते हैं तो बहुदा वह समाचार बनाकर स्वर्ण अक्षरों में अंकित हो जाता है और विश्व में अपनी पहचान प्राप्त कर लेता है। बढ़ती लोकप्रियता के कारण एक सामान्य व्यक्ति द्वारा लिखा गया साहित्य भी विश्व प्रणेता बन सकता है। इस

लोकप्रियता को बढ़ाने का कार्य पत्रकारिता के कंधों पर है। वैश्विक स्तर पर हिंदी पत्रकारिता अपने विविध आयामों के साथ पैर पसार रही है। हिंदी पत्रकारिता जितनी चुनौतियां लेकर खड़ी हुई है उतनी ही संभावनाएं भी विश्वपटल पर इसे मिलती जा रही है। कभी भी मात्र विचारों से विकास संभव नहीं हो सकता। विकास के पथ पर अग्रसर होने के लिए अत्यंत आवश्यक है कि जमीनी स्तर पर कार्य किए जाएं। हिंदी के प्रचार प्रसार में जो भूमिका केंद्रीय हिंदी समिति, हिंदी सलाहकार समिति, राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा निभाई गई है, वही भूमिका हिंदी पत्रकारिता को विश्व पटल पर प्रसारित करने के लिए भारत सरकार द्वारा कुछ अन्य समितियां के गठन द्वारा निभाई जानी होगी।

हिंदी पत्रकारिता, कंप्यूटर जगत, वेब पब्लिशिंग, इंटरनेट पत्रकारिता एवम विज्ञापन आदि के क्षेत्र में हिंदी अपना स्थान बना चुकी है। वैश्विक स्तर पर हिंदी की बढ़ती लोकप्रियता आज हमें एक संबल प्रदान करती है। हिंदी की संप्रेषण क्षमता हिंदी को मजबूती प्रदान करती है। यही कारण है कि अन्य भाषाओं से इतर हिंदी अपनी भावनाओं को अत्यंत निराले ढंग से सभी के समक्ष रख सकती है। ''आज भारत से बाहर के देषों में प्रतिदिन लगभग 35 हिंदी पत्रिकाएं और समाचार पत्र प्रकाषित होते हैं। दुनिया के शीर्ष 10 सबसे अधिक पढ़े जाने वाले समाचार पत्रों में से छह हिंदी में प्रकाषित होते हैं। दुनिया भर के 250–260 से अधिक विष्वविद्यालयों में हिंदी को एक भाषा के रूप में पढ़ाया जा रहा है।''[7]

सन्दर्भ–

1. विनोद गोदरे–हिंदी पत्रकारिता स्वरूप एवं संदर्भ, पृष्ठ संख्या 15–16
2. कुमार कौस्तुभ–विष्व मीडिया विमर्ष, कल्पना प्रकाषन, पृ0सं0 622
3. महिपाल सिंह–विष्व बाजार में हिन्दी, वाणी प्रकाषन, नई दिल्ली, हिंदी पत्रकारिता और जनसंचार की शब्दावली–डॉ. प्रदीप श्रीधर
4. अशोक श्रीवास्तव, समाचार 4 मीडिया, इंटरनेट
5. haribhoomi.com
6. डॉ0 अनुषब्द– हिन्दी पत्रकारिताः रूपक बनाम मिथक, वाणी प्रकाषन, पृ0सं0 88
7. haribhoomi.com